के लिये विवाह की व्यवस्था की गयी। बहुत से प्रयास किये गये और प्रलोभन भी दिये गये, लेकिन वे अपने निर्णय में अडिग रहीं। बेर्नादेत्त उनकी स्वभाविक नेता रही।

24 मई 1897, बर्नादेत्त और उनकी अन्य तीन सहेलियों के विचार जानकर कलीसिया के अधिकारियों ने उन्हें पहले सोदालिती में सदस्य के रूप में स्वीकार किया।

26 जुलाई 1897, उन चारों लड़कियों को संत अन्ना की पुत्रियाँ राँची के धर्म संघ में प्रथम प्रार्थिनियों के रूप में ग्रहण किया गया।

6 फरवरी 1899, नवशिष्यालय में प्रवेश

8 अप्रैल 1901, नवशिष्यालय में लोरेटो धर्मबहनों द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त करने के पश्चात् मेरी बेर्नादेत्त और अन्य तीन सहेलियाँ - सिसिलया, बेरोनिका एवं मेरी ने प्रथम व्रतधारण किया।

26 जुलाई 1903, चारों धर्मबहनों ने अंतिम व्रत लिया। परिवार के सभी प्रियजन और सगे-संबंधी उनके इस नये जीवन शैली से खुश थे, जौभि उनकी संस्कृति के लिय यह बिल्कुल नया था।

1 नवम्बर 1903-31 अक्टूबर 1906, सिस्टर मेरी बेर्नादेत्त धर्मसंघ की प्रथम सुपीरियर जेनरल नियुक्त की गई।

21 नवम्बर 1915-31 दिसम्बर 1918, सिस्टर मेरी बेर्नादेत्त धर्मसंघ की दूसरी बार सुपीरियर जेनरल नियुक्त की गई।

14-29 जुलाई 1949, सिस्टर मेरी बेर्नादेत्त तपेदिक (टी.बी.) बीमारी के कारण हॉली फैमिली अस्पताल, माण्डर में भरती की गयी। जीवन के अंतिम काल के रुग्नावस्था में उनके गुण, जैसे धीरता व सहनशीलता, और भी झलकने लगे। वह कहा करती थीं ''येसु के दु:ख से मेरा दु:ख कितना कम है!'' पूर्ण रूप से अपने को नर्स की हाथों में सौंप कर दुख के समय कहती थी कि ''प्रभु! मैं आपके पास जाना चाहती हूँ किन्तु मेरी इच्छा नहीं, तेरी पवित्र इच्छा पूरी हो''

16 अप्रैल 1961, उसने संत अन्ना कॉन्वेंट रांची के मूल मठ में धर्मबहनों एवं नोविसों की प्रार्थनाओं एवं तीर-विनती के मध्य अंतिम सांस ली।